प्रश्न ६—कहानी का परिभाषा एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहानी के तत्त्वों का विश्लेषण कीजिए।

आज का लोकप्रिय साहित्यिक विधाओं में कहानी को मूर्धन्य स्थान प्राप्त है। "साहित्य की समस्त विधाओ मे यही एक ऐसी विधा है जो पाठक का चरम अनुरंजन करने के साथ-साथ एक चिरन्तन रस का उद्घाटन करने में प्रयत्नवान रहती है। मेरा विचार तो यह है कि लोक-कल्याण भावना और लोक-रंजन तत्त्व का जितना सुन्दर समन्वय इस विधा से होता है उतना साहित्य की किसी अन्य विधा में नहीं।"

कहानी की परिभाषा आज तक सर्वसम्मत नहीं हो सकी है क्योंकि अभी यह विकसनशील विधा है है, कहानी की प्रगति क्षण-क्षण में निरन्तर नवीनता प्राप्त कर रही है, अतः उसका स्वरूप 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति' वाला है।

इसीलिए आलोचक उसके स्वरूप को रूपायित करने में अभी सफल नहीं हो सके हैं—अतः यही कहना समुचित प्रतीत होता है कि—

लखना बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर॥

फिर भी विद्वानों ने प्रयास किया है, उस प्रयास की झलक पाश्चात्य और प्राच्य विद्वानों की दृष्टि में दर्शनीय है—

(१) **हडसन**—"लघुकथा में केवल एक ही मूल भाव रहता है।"

(२) **वेल्स**—"कहानी को आकार में अधिक से अधिक इतना बड़ा होना चाहिए कि वह सरलता से बीस मिनट में पढ़ी जा सके।"

(३) **एडगलन एलर पो**—"कहानी वह गद्यकथा है जो आधे घण्टे से लेकर दो घण्टे में समाप्त हो जाती है।"

(४) **एलेरी**—सक्रियता पर जोर देते हुए लिखते हैं कि—"कहानी घुड़दौड़ के समान है जिसमें प्रारम्भ और अन्त का विशेष महत्व होता है—A short story is just like horse-race. It is start and finish which count most.

Scanned with CamScanner

(५) सर हूल वाल्पोल—' कहानी-कहानी होनी चाहिए, अर्थात् उसमें घटित होने वाली वस्तुओं का ऐसा लेखा-जोखा होना चाहिए जो घटना और आकस्मिकता से परिपूर्ण हो उसमें क्षिप्र गति का ऐसा अप्रत्याशित विकास हो जो कुतूहल के द्वारा सार और सन्तोष को पूर्ण अवस्था तक ले जाये।"

(६) सर एलग्राइट—"आधुनिक कहानी का लक्ष्य केवल वास्तविक अथवा तर्कपूर्ण क्रम के द्वारा जीवन की यथाघटित घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं है, वरन् जीवन के एक छोटे अंश का स्पष्ट और कलापूर्ण चित्र चित्रित करना है, जिससे (लेखक) की पूर्व निर्धारित घटनाएँ हृदयस्पर्शी बन सकें और घटनायें पारस्परिक सम्बन्ध और वातावरण की एकता को प्रकट करें।"

(७) एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका—"अन्त में स्वतन्त्र साहित्य विधा के रूप में कहानी का वर्णन करते हुए इससे अधिक और क्या कहा जा सकता है कि वह संक्षिप्त, अत्यधिक संगठित तथा पूर्ण कथा रूप है।"

भारतीय विद्वानों द्वारा प्रदत्त परिभाषायें निम्नलिखित हैं—

(१) प्रेमचन्द—"कहानी (गल्प) एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सब उसी भाव को पुष्ट करते हैं।"

(२) प्रसाद—"सौन्दर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा रस की सृष्टि करना ही कहानी का उद्देश्य है।"

(३) रायकृष्ण दास—"कहानी मनोरंजन के साथ-साथ किसी न किसी सत्य का उद्घाटन करती है तथा आख्यायिका में सौन्दर्य की झलक का रस है।"

(४) श्यामसुन्दरदास—"आख्यायिका एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर नाटकीय आख्यान है।"

(५) जैनेन्द्रकुमार—"कहानी तो एक भूख है जो निरन्तर समाधान पाने की कोशिश में रहती है। हमारे अपने सवाल होते हैं, शंकायें होती हैं, चिन्तायें होती हैं और हम उनका उत्तर, उनका समाधान खोजने का, पाने का सतत प्रयत्न करते रहते हैं। हमारे प्रयोग होते रहते हैं। उदाहरणों और मिसालों की खोज होती रहती है। कहानी उस खोज के प्रयत्न का एक उदाहरण है।"

(६) अज्ञेय—"कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी, एक शिक्षा है, जो उम्र भर मिलती है, और समाप्त नहीं होती।"

(७) चन्द्रगुप्त विद्यालंकार—"घटनात्मक इकहरे चित्रण का नाम कहानी है। साहित्य के सभी अङ्गों के समान रस उसका आवश्यक गुण है।"

(८) गुलाबराय—"छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है, जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति-केन्द्रित घटना या घटनाओं के आवश्यक उत्थान, पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला वर्णन हो।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर आधुनिक कहानियों की विशेषतायें निम्नलिखित हैं—

'आकार लाघव, पात्रों की न्यूनता, कार्य-स्थान-काल की एकता, जीवन की

Scanned with CamScanner

कहानी पर यथार्थ का ...

घटना अथवा स्थिति विशेष का मार्मिक चित्रण, संकेतात्मक
अथवा परिस्थिति की सरलता, एक भावना एक घटना का प्रभावपूर्ण चित्रण, नाटकीय कथनोपकथन,
चरित्र-चित्रण, उद्देश्य की स्पष्टता, व्यक्तित्व प्रधान शैली, मनोवैज्ञानिक चित्रण, औत्सुक्य, मानव
परोक्ष रूप से मानवीय सन्देश, मानव-मन का
के शाश्वत संघर्ष की व्यंजना कलात्मक शैली आदि ।''[1]

कहानी की इन विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित तत्त्व निर्धारित किये गये हैं—

(१) कथावस्तु, (२) पात्र तथा चरित्र-चित्रण, (३) कथोपकथन या संवाद, (४) वातावरण अथवा देशकाल, (५) भाषा-शैली, (६) उद्देश्य ।

कथावस्तु—कथावस्तु कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है । किसी समय किसी
कथावस्तु के कहानी की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी किन्तु आज बिना कथा-
वस्तु के भी कहानियों का सृजन हो रहा है । डा० गुलाबराय का कथन है कि बिल्कुल
आधुनिक कहानी में घटनाचक्र का महत्त्व घटता जा रहा है । घटनाएँ भाव और
विचारों का आश्रय देने के लिए अर्गला (अरगनी) का सा काम देती हैं और कहीं-कहीं
वे एक बिन्दु की खूंटीमात्र रह जाती हैं ।" फिर भी कथावस्तु कहानी का महत्त्वपूर्ण
अङ्ग है । इस अङ्ग का चयन मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र से हो सकता है ।
विशेषतः इतिहास, पुराण, पत्रिका, दैनिक जीवन, साहित्य और कल्पना से कथावस्तु
का ग्रहण होता है । कथावस्तु की सफलता के लिए निम्नलिखित विशेषताओं का
होना आवश्यक है । (१) संवेदना, (२) संघर्ष, (३) कौतूहल, (४) औत्सुक्य और
करुणा, (५) कथानक का किसी सत्य के उद्घाटन में समर्थ होना, (६) कथानक का
खण्डों में विभाजन और संक्षेप । इन विशेषताओं से सम्पन्न कथानक सुन्दर प्रभावशाली
कहानी के सृजन में योगदान दे सकता है । कथावस्तु का विभाजन आरम्भ, मध्य और
अन्त के रूप में होता है ।

आरम्भ—कहानी का आरम्भ कई प्रकार से किया जा सकता है; उदाहरण के लिए— १. परिचयात्मक भूमिका, २. कोरा परिचयात्मक आरम्भ, ३. नवीन ढंग का आकस्मिक आरम्भ, ४. प्रकृति-चित्रण ५. नाटकीय कथोपकथन, ६. इतिवृत्तात्मक, ७. कौतूहलोत्पादक आरम्भ । किन्तु कहानी का आरम्भ कलात्मक होना चाहिए, नाटकीय होना चाहिए तथा उसे उत्सुकता जाग्रत करने में समर्थ होना चाहिए । यदि आरम्भ सुन्दर और रसात्मक हो तो कहना ही क्या ?

मध्य—कहानी के मध्य भाग का सम्बन्ध किसी समस्या या संघर्ष से अवश्य होना चाहिए । इस संघर्ष या समस्या का प्रस्तुतीकरण कलात्मक रूप में होना चाहिए । यह भी स्मरण रखने योग्य है कि कहानी में संवेदना धीरे-धीरे स्पष्ट हो तथा कहानी के प्रति पाठक का औत्सुक्य प्रतिपल बढ़ता चले । कहानी की वस्तु का विकास प्रवाहपूर्ण ढंग से हो और उसकी रोचकता कहीं भी क्षीण न हो । कहानी का अधिकांश कथ्य इस भाग से स्पष्ट हो जाना चाहिए ।

अन्त—कहानी के विकास की यह अन्तिम अवस्था है । कहानी का अन्त प्रारम्भ के अनुरूप संतुलित होना चाहिए । इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ होनी

Scanned with CamScanner